नामधारी नितनेम

भूमिका

२०५७ – 2000

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library

Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library has been created with the approval and personal blessings of Sri Satguru Uday Singh Ji. You can easily access the wealth of teaching, learning and research materials on Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library online, which until now have only been available to a handful of scholars and researchers.

This new Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-library allows school children, students, researchers and armchair scholars anywhere in the world at any time to study and learn from the original documents.

As well as opening access to our historical pieces of world heritage, digitisation ensures the long-term protection and conservation of these fragile treasures. This is a significant milestone in the development of the Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library, but it is just a first step on a long road.

Please join with us in this remarkable transformation of the Library. You can share your books, magazines, pamphlets, photos, music, videos etc. This will ensure they are preserved for generations to come. Each item will be fully acknowledged.

To continue this work, we need your help

Your generous contribution and help will ensure that an ever-growing number of the Library's collections are conserved and digitised, and are made available to students, scholars, and readers the world over. The Sri Satguru Jagjit Singh Ji E-Library collection is growing day by day and some rare and priceless books/magazines/manuscripts and other items have already been digitised.

We would like to thank all the contributors who have kindly provided items from their collections. This is appreciated by us now and many readers in the future.

Contact Details

For further information - please contact

Email: NamdhariElibrary@gmail.com

kirpal singh chana

अमृत तैयार करने की विधि

सोध (शुद्ध) मर्यादा को धारण करने वाले पांच सिंघ स्नान करके प्रथम मर्यादा अनुसार कड़ाह प्रसाद तैयार करें। जहां अमृत तैयार करना हो, वह स्थान सोध (शुद्ध) जल से साफ करके पवित्र किया गया हो। कड़ाह प्रसाद पास रख कर कमर–कस्से सजाए हुए हों, उन में से चार सिंघ पोथियों में से वाणियां पढ़ें–1. जपु, 2. जापु, 3. चौपई (पुन राछस), 4. दस स्वैये पा. 10 (स्रावग सुध समूह), 5. अनंद। बाटे में सोध का जल डाल कर उस में बताशे (यदि न मिलें तो गुड़) डाल कर पांचवां सिंघ उस में खण्डा फेरे, उस में निगाह रखे और भजन करें। वाणियों का पाठ आरंभ करने और समाप्ति समय अरदास की जाए। अमृत बनाते समय कोई सिंघ वचन (शब्द) न बोले।

अमृत पान करने की विधि

अमृत पान करने वाला सिंघ, जिस ने पहले वस्त्र धो कर पवित्र किए हों, पांच ककार को धारण करने वाला हो, केशी स्नान करके वस्त्र पहन कर उपस्थित हो। अमृत पान कराने वाले दो सिंघ हों। एके के हाथ में बाटा हो और दूसरा सिंघ अमृत पान कराए। अमृत पान करवाने वालो और अमृत पान करने वालों के कमर कस्से तथा सफाजंग सजाए हुए हों। हाथ धोकर पांच बार अंजुलि से आचमन (अमृतपान) करें। अमृतपान करवाने वाला सिंघ प्रत्येक आचमन पर कहे–बोल, वाहिगुरू जी का ख़ालसा,

स्री वाहिगुरु जी की फतह। अमृतपान करने वाला कहे वाहिगुरु जी का खालसा स्री वाहिगुरु जी की फतह। इस के पश्चात् पांच बार थोड़ा थोड़ा अमृत केशों में डाला जाए तथा फिर पांच बार आँखों पर छिंटें डाले जाएं। हर बार अमृत पान करवाने वाला फते बुलाये और साथ ही अमृतपान करने वाला।

माईयां (स्त्रियां) अमृतपान करते समय कमर–कस्सा और सफाजंग न सजाएं, केवल फते के उत्तर में हर बार सति श्री अकाल ही बुलाएं।

(यह मर्यादा सतिगुरु राम सिंघ जी की बतलाई हुई है।)

हवन करने की विधि

सोध मर्यादा के धारण करने वाले सात सिंघ केशी स्नान करके पवित्र आसन विछाकर कमरकस्से लगाकर सफाजंग सजा कर बैठें। हवन छत पर न किया जाए।

हवन करने वाला स्थान छत के बगैर हो, वह स्थान साफ करके, सोध जल से धोकर पवित्र किया गया हो। हवन के लिए लकड़ियां बेरी अथवा पलाह की हों। एक बर्तन में घी और हवन सामग्री मिलाकर और गड़वे में पवित्र जल रखा हो। हवन कुण्ड में लकड़ियां चिन कर अग्नि प्रज्वलित की जायें। फूँक न मारी जाये। सोध की रूमाली में शुष्क नारियल धोकर, लपेट कर हवन कुण्ड में लकड़ियों पर तब रखा जाए जब अरदास करने वाला सिंघ कहे कि–इस निमित्त हवन करने लगे हैं और उस समय ही

पांच सिंघ हवन की बाणियां जपु, जापु, चण्डी दी वार, उग्रदंती, अकाल उसतत, चण्डी चरित्र दुसरा और चौपई (पुन राछस का काटा सीसा से समाप्त मसतु सुभ मसतु तक) का पाठ पोथियों से आरंभ कर दें। छटा सिंघ सामग्री की आहुति डाले। सातवां साथ ही अग्नि पर जल का छींटा दे, थोड़ा थोड़ा। छठा और सातवां सिंघ जिहवा हिला कर भजन करे और कोई वचन (शब्द) न बोला जाए। हवन की समाप्ति के समय मनोरथ की पूर्ति के लिए अरदास की जाये।

गुर कृपा से जाना

सिरजनहार की सिरजना, मनुष्य ने ब्रह्माण्ड को खोजने (जानने) का बड़ा प्रयत्न किया है, मनुष्य सदियों से ही नहीं, हज़ारों–लाखों वर्षों से यह जानने के लिये तप, साधना, चिन्तन और खोज करता रहा है कि सृष्टि, इस का समूचा वायू–मंडल, आकाश, चन्द्रमा, तारे, ग्रह, सूर्य, बात क्या समूचा ब्रह्माण्ड कैसे बना और इसे किसने बनाया?

ऋषियों, मुनियों, साधकों आदि ने, जिसने सब कुछ बनाया है, उसे कर्त्ता–पुरख कहा है, खण्ड–ब्रह्माण्ड, जल–थल, वन–वनस्पति, जीव–जन्तुओं का कर्त्ता।

जब मनुष्य के ध्यान में दृष्टिगोचर जगन नहीं था तब कर्त्ता पुरख शून्य समाधि में था, निर्गुण रूप में–

अरबद नरबद धुंधूकारा।
धरणि न गगना हुकमु अपारा।

न दिनु रैनि न चंदु न सूरजु
सुंन समाधि लगाइदा। (मारू महला पहला)

इस शुन्य–समाधि की स्थिाति में सर्गुण रूप हो कर उस ने सृष्टि की रचना की। यहूदी धर्म के आधर ग्रंथ तौरेत में लिखा है, 'उसी (परमेश्वर) ने पृथ्वी को अपनी क्षमता (समार्थ्य) द्वारा बनाया। उस ने जगत को अपनी बुद्धि द्वारा स्थिर किया और आकाश को अपनी कला प्रवीणता से ताना।'

सतिगुरु साहिबान ने उस सृजनात्मक शक्ति को ओंकार लिखा है। उस ने जगत का सृजन किया है। परन्तु जगत की रचना किस समय, दिन, तिथि, वार अथवा ऋतु में हुई इस सम्बन्धी चिन्तन–मनन के पश्चात् यह ही निष्कर्ष निकलता है–

जा करता सिरठी कउ साजे
आपे जाणै सोई।। (जपु–सतिगुरु नानक देव जी)

उसी कर्त्ता–पुरुख ने प्रकृति की सृजना की, तीन गुण रचे–सतो, तमो तथा रजो और जीव की रचना की। समूचा प्रसार पुरुष और प्रकृति के संयोग में हुआ।

जीवों की 84 लाख योनियां बनीं जिन में मनुष्य श्रेष्ठ बनाः

अवर जोनि तेरी पनिहारी।
इसु धरती महि तेरी सिकदारी।

(आसा महला 5)

मनुष्य को इस बात का ध्यान करवाते रहने के लिए

कि तू सिरजनहार की रचना है उसे मत भूल, समय समय पर देवी–देवते, पीर–पैगम्बर हुए, परन्तु उन्होंने पारब्रह्म परमेश्वर की सर्वोच्चता बतलाने के स्थान पर अपनी पूजा करवानी आरम्भ कर दी।

सम अपनी अपनी उरझाना।

पारब्रह्म काहूं न पछाना। (विचित्र नाटक)

जिस के परिणाम स्वरूप मनुष्य भटक गया। वह अपने मूल से टूटा रहा और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार में ग्रस्त रहा।

श्री सतिगुरु गोबिंद सिंह जी ने इस सम्बन्ध में विस्तार–पूर्वक लिखते हुए अपनी कथा में कहा है कि अकाल पुरख (पुरष) ने उन्हें धरती पर धर्म चलाने और लोगों को (निराकार को भूलने) के दुष्कर्म करने से रोकने के लिए भेजा था। क्योंकि जो व्यक्ति निरंकार को भूल जाता है वह और भी अधिक दुष्कर्म करने लग जाता है।

श्री सतिगुरु गोबिन्द सिंह जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि और सतिगुरू नानक देव जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि एक ही थी। आप त्रेता के अवतार सूर्यवंशी भगवान रामचंद्र के अंश वंश में से थे। लव के पुत्र पोत्रों में एक सोढ़ी राय हुए जिन की संतान सोढी कहलाई और राज्य करती रही। कुश की आगामी पीढ़ियों ने काशी जाकर चारों वेदों का अध्ययन किया और वेदी कहलाए और–

तिन बेदीयन के कुल बिखे

प्रगटे नानक राइ।

सभ सिक्खन को सुख दए
जह्ह तह्ह भए सहाइ। (विचित्र नाटक)

श्री सतिगुरु नानक देव जी के अवतार धारन करने से पूर्व आध्यात्मिक मानव–मूल्यों और संसार की मूल सभ्यता के केन्द्र भारत का पतन हो चुका था। राजनैतिक दृष्टि से काबुल, कंधार अथवा समरकन्द की ओर से आने वाले हमलावर (आक्रमणकारी) यहां के शासक बन बैठे जिन के वंशजों के वंशज राज्य करते रहे। वे वंश थे, ख़िलजी, तुग़लक, गुलाम, लोधी आदि। उन्होंने भारत पर अत्याचार किए। यहां के मंदिरों को ध्वस्त किया। कीमती सामान लूटा। धर्म, कर्म, यज्ञ–हवन आदि करने वाले लोगों पर अत्याचार किए। उन्हें मुसलमान बनने के लिये विवश किया। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने लिखा है–

हिंदुन को दुख दए महाए।
देवन के मंदिर गिरवाए।
घोर नाथ से अउघड़ साधू।
पंडित दत से सुमत अगाधू।
मरवा चीलन को खुलवाए।
केचित मे खैं ठोक सुकाए।
केचित कच्चे चंम मढ़ाए।
केचित कुत्तिओ से तुड़वाए।
तुरक होवणा जिनै न मानिओ।
तिन तिन कौ अति दै दुख हानिओ।
गो गरीब को बध कर सूटैं।

धनी देख ताका धन लूटैं।
यग हवन कोई करन न पाए।
करै जु तहि दुख देत महाए।
सुंद्र पिखै जाहि की तरनी।
पकर करै बल सों जिन घरनी।

(पंथ प्रकाश ज्ञानी ज्ञान सिंहः अध्याय–3)

यह स्थिति मुगल हमलावर (आक्रमणकारी) बाबर समय भी थी। वे तो हिन्दुओं की क्या, मुसलमानों की इज्जत के भी सगे नहीं थे। उस समय मुसलिम महिलाएं भी शारीरिक और मानसिक दुख (पीड़ा) भोगती रहीं।

इस दुदर्शा की पृष्ठभूमि में भारत का बाहुबल, बुद्धि और अध्यात्मिक बल रखने वाले वर्गों का हथियार गिरा देना था।

यहां राज्य–तन्त्र और फ़ौजी शक्ति मुसलमान शासकों की अधीनता स्वीकार कर चुकी थी। पंडित (बुद्धिमान) भी उन से पीछे नहीं रहे। उन्होंने तो बल्कि कहा:

नील बसत्र ले कपड़े पहिरे
तुरक पठाणी अमलु कीआ। (महला 1)

और

खत्रीआं त धरमु छोड़िआ
मलेछ भाखिआ गही। (महला 1)

उनके हिन्दु मर्यादा के धारण करने वाले पाखण्ड के बारे में पहले पातशाह लिखते हैं:–

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु

गोबरि तरणु न जाइ।
धोती टिका तै जपमाली
धानु मलेछां खाई।
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा
संजमु तुरका भाई। (आसा दी वार)

वे पंडित, तुर्कों को खुश करने के लिये केवल मुसलिम धर्म ग्रंथ ही नहीं पढ़ते थे बल्कि सामी धर्मों के चारों कतेबः तौरेत, जब्बूर, इंज़ील और कुरान पढ़ते थे ताकि अपनी वफादारी का पक्का सुबूत (प्रमाण) दे सकें।

अध्यात्मिक चिंतन करने वाले लोग पहाड़ों पर चले गए। देश की दुर्दशा के सम्बन्ध में सतिगुरु नानक देव जी ने लिख–

कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ।
कुड़ अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ।
हउ भालि विकुंनी होई।
आधेरै राहु ना कोई।

इसी अधोगति में से लोगों को निकालने के लिये, धरती के मनुष्यों को सत्य मार्ग पर लाने के लिये, सतिगुरु जी ने उदासियां (यात्राएं) की। सांसारिक जीवों को धर्म का मार्ग दिखलाया और अकाल पुरुष से साक्षात्कार करवाया। भाई गुरदास जी ने उन के उपदेश के प्रभाव सम्बन्धी लिखा है–

सुणी पुकारि दातार प्रभु
गुरु नानक जग माहि पठाइआ।
चरण धोई रहरासि करि
चरणाम्रितु सिखां पीलाइआ।
पारब्रहम पूरन ब्रहम
कलिजुगि अंदरि इक दिखाइआ।
चारे पैर धरम दे
चारि वरनि इक वरनु कराइआ।
राणा रंकु बराबरी
पैरी पवणा जग वरताइआ।
उलटा खेलु पिरंम दा
पैरा उपरि सीस निवाइआ।
कलिजुग बाबे तारिआ
सतिनामु पड़ि मंत्र सुणाइआ।
कलि तारण गुरु नानकु आइआ।

सतिगुरु जी ने ग़रीब, कमज़ोर तथा सच्चे–सुच्चे लोगों पर कृपा की, अन्ध विश्वासियों को ज्ञान दिया, बुद्धिजीवियों के साथ गोष्ठियां की, जीव–कल्याण के लिये उपदेश दिया। आप के पैरोकारों की एक जमात तैयार हो गई जिसे सदैव मार्ग–दर्शन की आवश्यकता थी। इस जमात के कल्याण के लिए आप ने अपने आज्ञाकारी सिक्ख भाई लहणा जी को गुरुगद्दी सौंप (अर्पित कर) के इस असार संसार से विदा ली। केवल रूप बदल गया ज्योति वही रही और भाई लहणा जी सतिगुरु अंगद देव जी के रूप में सिक्ख

सेवकों पर बख्शिश करने लगे–

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ।
जोति ओहा जुगति साइ
सहि काइआ फेरि पलटीऐ।

(रामकली की वार राई बलवंडि तथा सतै डूमि आखी)

यह ज्योति गुरू अमरदास और उस से आगे भी काया पलट कर आती रही। यह निरंजनी ज्योति (निरंजन की) थी जो युगों–युगान्तरों से मानवता के कल्याणार्थ, जीवन मात्र के भले के लिये, सृष्टि के उद्धान हेतु प्रकट होती रही। इस सम्बन्ध में बाणी में लिखा है–

सतिजुगि तै माणिओ,
छलिओ बलि बावन भाइओ।
त्रेतै तै माणिओ,
रामु रघुवंसु कहाइओ।
दुआपुरि क्रिसन मुरारि,
कंसु किरतारथु कीओ।
उग्रसैण कउ राजु
अभै भगतह जन दीओ।
कलिजुगि प्रमाणु नानक
गुरु अंगदु अमरु कहाइओ।
स्री गुरु राजु अबचलु अटलु,
आदि पुरखि फुरमाइओ।

सतिगुरु साहिबान ने प्राणी मात्र के भले के लिये उपदेश दिया, खसम की वाणी द्वारा ज्ञान दिया और सिक्खों को

उपदेश दिया कि सतिगुरु की बाणी को सत्य मानों क्योंकि वह करता (कर्त्ता) के मुख से निकली हुई है–

सतिगुर की बाणी
सति सति करि जाणहु
गुरसिखहु हरि करता
आपि मुहहु कढाए। (महला 4)

सतिगुरु की वाणी के अतिरिक्त अन्य वाणी कच्ची है:

सतिगुरु बिना होर कची है बाणी।
बाणी ता कची सतिगुरू बाझहु
होर कची बाणी। (महला 3)

कच्ची और सच्ची वाणी का भ्रम दूर करने के लिए, सतिगुरू साहिबान ने समय समय पर बाणी की रचना करने के साथ–साथ अपने समकालीन और पूर्वकालीन भक्तों की वाणी एकत्रित की। सतिगुरु अर्जुन देव जी ने इस समस्त वाणी का सम्पादन किया। गुरुमति विचारधारा की प्रौढ़ता करती हुई भट्टों और कीरतनियों की वाणी को इस में शामिल किया। आप ने गुरू वाणी का ग्रंथ तैयार किया जिसे पोथी साहिब, बीड़, श्री आदि ग्रंथ साहिब, सवारा साहिब, दरबार साहिब आदि नामों से लिखा जाने लगा।

सतिगुरु जी ने इस के अर्थों, लगों–मात्राओं को समझ कर शुद्ध पाठ करने की शिक्षा दी। वाणी का शुद्ध पाठ सुनाने वालों को सतिगुरु साहिबान द्वारा इनाम, भेंट, मान, प्रशंसा मिलने लगे। छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद जी

तो, 'सूरज प्रकाश' अनुसार जपु जी के शुद्ध पाठ को सुन कर एक सिक्ख गुपाले को अपनी गद्दी देने के लिए तैयार हो गए। परन्तु उस सिक्ख के मन में केवल बढिया घोड़ा लेने की भावना पैदा हुई जिसे सतिगुरु जी ने पूरा कर दिया।

गुरबाणी देहधारी गुरु की रचना है। गुरबाणी में वर्णित की गई, गुरु या सतिगुरु की स्तुति देहधारी सतिगुरु पर ही उचित घटती है इस लिए गुरबाणी गुरु का विकल्प नहीं हो सकती। इसका निर्णय ऐतिहासिक तौर पर, आठवें सतिगुरु श्री गुरु हरिकृष्ण जी के समय ही हो गया था।

सीतला निकलने के कारण आप का बाल्यावस्था में ही शरीर अस्वस्थ्य रहने लगा। आप जी की हज़ूरी (उपस्थिति) में बैठे दिल्ली की संगत के मुखिया भाई गुरबख्श ने प्रार्थना की:

आगै भए सपत गुर जोइ।
दास किधौ लाइक सुत होइ।
सभ बिघ ते समरथ तिस करकै।
गुरता गादी पर बैठरकै।
बहुर चहै प्रलोक पिआना।
करत रहै जन गन दुख हाना।

(गुर प्रताप सूरज)

इस लिए कृपा करके हमें सतिगुरु के दामन से जोड़ दो। सिक्खों की भावना को ध्यान में रखकर सतिगुरु जी ने सिक्खों में देहधारी गुरु प्रति श्रद्धा की मात्रा जानने के

लिये वचन किया–

गुरगादी अविचल जग माहीं।
वधहि प्रताप मिटहि किम नाहीं।
मनो कामना संगत पावहि।
लै गुर ते उपदेस कमावहि।
गुरु ग्रंथ साहिब सम केरा,
जो हमरो चहि दरसन हेरा। (गुर प्रताप सूरज)

परन्तु सिक्खों को पता था पहले ही गुरु अंश ने गुरगद्दी पर संतान होने का अधिकार समझ के दुबिधा खड़ी कर दी थी। गुरुगद्दी के दावेदारों की गणना और अधिक हो गई थी। श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ कोई भी लिखवा कर उस को मान कर प्रकाश करके, उस के सहारे अपनी मान–प्रतिष्ठा, रोज़ी–रोटी का मार्ग बना सकता था और गुरगद्दी को हास्यस्पद बना सकता था। इस लिए भाई गुरबख्श ने फिर प्रार्थना की कि सिक्खों की भलाई देहधारी गुरू के दामन से जोड़ने में ही हो सकती है। क्योंकि–

बिन गुर संगत ह्वै थिर कोइ न।
जथा न्रिपत बिन सैना होइ न।
जो गुरु ग्रंथ आप ने भनयो।
सो सगरे सिखन हू सुनयो।
लिख लै है अब सोढी सारे।
बैठहि मानी गुर होइ भारे। (गुर प्रताप सूरज)

सतिगुरु सच्चे पातशाह जी ने सिक्खों की इन प्रार्थनाओं पर खुशी प्रकट की और–

बाबा बासहि जि ग्राम बकाले।
बनि गुर संगत सगल समाले।

कह कर गुरगद्दी दी।

नौवें पातशाह ने भोरे (तैखाना) में बैठकर कई वर्ष तपस्या की, दान–पुण्य किये। गद्दी नशीन होने के पश्चात् आप ने बंगाल, आसाम तक के उत्तर–पूर्वी भारत का भ्रमण किया। पटने शहर में, आप के गृह में दसवें पातशाह प्रकाशमान हुए। आप ने अन्याय और अत्याचार को जड़ से नष्ट करने के लिये, सनातम धर्म की रक्षा के लिये, भारतियों को औरंगज़ेब द्वारा मुसलमान बनाने से बचाने के लिये 1675 ई. (1732 वि.) को शहादत दी।

दसवें पातशाह ने गुरगद्दी को सुशोभित किया। आप ने शास्त्र विद्या गृहण की। शस्त्र विद्या में प्रवीणता प्राप्त की। भारत की अधोगति के बारे में चिन्तन किया। वीर रस प्रधान तथा अध्यात्मिक वाणी की रचना की। अच्छे कवियों और शस्त्रधारियों पर बख़्शिश की। ख़ालसा पंथ की साजना की और जालिम सरकार से लोहा लेने की तैयारी की। युद्धों में आप के साथ केवल मुगल फ़ौज ही नहीं लड़ी, जिन के अधिकारों के लिए आप लड़े वे हिन्दु राजे विशेष करके बाईधार के पहाड़ी राजे भी आप के विरुद्ध लड़े। सतिगुरु जी रणनीति और राजनीति अनुसार भंगाणी, आनन्दपुर के किले, चमकौर की गढ़ी और खिदराणे की ढाब आदि स्थानों पर जंग करते रहे। बादशाह को ज़फ़रनामा लिखकर उसके झूठे होने का पर्दाफाश करते

रहे। ज़ालिम साम्राज्य की ईंट से ईंट बजाने के लिये बंदे को तैयार करते रहे।

चमकौर की गढ़ी में से निकल कर माछीवाड़े के जंगलों को पार करके, उच्च के पीर बन कर ढिलवीं पहुंचने के समय मुगल फ़ौज और उसके गुप्तचरों को भ्रम में रखने के लिये सतिगुरू जी ने प्रथम वार नीले या सुरमई वस्त्र पहने। यद्यपि आप भी जानते थे कि सतिगुरु नानक देव जी ने लिखा है कि नीले वस्त्र पहनना तुर्कों पठानों अथवा मलेच्छों का पहरावा है फिर भी सोढी कउल राय ने ढिलवीं पहुंचने पर आप से प्रार्थना की कि "यह क्या खेल (क्रीड़ा) है? सच्चे पातशाह जी! आप ने तुर्की पहरावा क्यों धारण किया है। आप ने इसे नीति और समय की आवश्यकता बतलाई और साथ ही केशी स्नान करके श्वेत वस्त्र पहन कर अंगीठा जला कर, लीर–लीर (तार तार) करके उस में नीला वस्त्र जलाते हुए यह पंक्ति पलटाई–

नील बसतर ले कपड़े पहिरे।

तुरक पठाणी अमलु कीआ।

इसी की गवाही मैकालिफ ने दी है।

इस सम्बन्धी कान्ह सिंह नाभा ने लिखा है:–

यहां (ढिलवां कलां) कलगीधर, सोढी साहिब कौल जी के घर विराजमान थे। कौल जी की प्रार्थना मान कर माछीवाड़े वाला नीला पहरावा उतार कर श्वेत वस्त्र धारण किये। गुरु साहिब ने नीली चादर अग्नि में जलाते समय वचन किया:–

'नील वसत्र ले कपड़े फाड़े
तुरक पठाणी अमल गइआ। (महान कोष)

ज्ञानी करतार सिंह कलासवालिए, हैड ग्रंथी (मुख्य ग्रंथी) श्री दरबार साहिब अमृतसर की काव्य रचना में इस सम्बन्धी लिखा है:–

केस हरे कर के चोजी सतिगुरु जी
चल पास अंगीठे दे जावंदे ने।
लीरां करके नीली पुशाक दीआं
विच अग्ग दे पा जलांवदे ने।
नाले फूकदे जांदे पुशाक तांई।,
नाले तुक इह पढ़ सुनांवदे ने।
यथा नील बसतर लै कपड़े फाड़े
तुरक पठाणी अमल गइआ।
सुण कउल जी ने पासों टोक कीती,
शबद उलटने किस तरहां भांवदे ने?
राम राइ ने तुक उलटाई है सी
गुरू ओस नूं मुख न लांवदे ने।
तुसां पहिरे दे था फाड़े अखया ए
गया कीआ वी उलट दिसांवदे ने।
शबद उलटिआ वार परवार सारा
'सी' कलगीधर बतांवदे ने।
शबद उलटे बिनां करतार सिंघा
काबू तुरक न किसे दे आंवदे ने।

(दशमेश प्रकाश)

श्री सतिगुरु गोबिंद सिंह जी ने तुक यद्यपि पलटाई (बदली) परन्तु बीड़ में तुक (पंक्ति) जैसे की तैसी रही, पलटाई (बदली) हुई तुक चढ़ (अंकित) न हो सकी क्योंकि उस के पश्चात् कोई बीड़ न तैयार हुई, न उच्चारण की गई। बीड़ में नौवें पातशाह की बाणी अंकित करके आप जी पहले ही आनंदपुर साहिब में 1732 वि. (1675 ई.) को कार्य पूर्ण कर चुके थे। इस का प्रमाण 23 पौष 1732 की लिखी हुई एक बीड़ है जो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सिक्ख रैफरैंस लाडब्रेरी में पड़ी देखी गई।

दमदमा में दशम पातशाह द्वारा भाई मनी सिंह जी के हाथों बीड़ का लिखवाया जाना भी कुछ समय से प्रचलित है। वार्ता बनाई गई है कि सतिगुरु जी ने (1762 वि.) 1705 ई. में धीरमल से बीड़ मंगवाई तब उस ने ताना मारा कि यदि वह गुरू है तो स्वयं ही आत्मिक शक्ति से बीड़ का उच्चारण क्यों नहीं कर लेता। तब सतिगुरु जी ने बीड़ का उच्चारण किया।

परन्तु यह धारणा गलत है। यदि यह ठीक होती तो 'गुरु बिलास' के कर्ता भाई सुक्खा सिंघ, 'श्री गुरु प्रताप सूरज' के रचनाकार भाई संतोख सिंघ इस का उल्लेख अवश्य करते। ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी ने 1879 में प्रकाशित 'श्री गुरु पंथ प्रकाश' में भी इस सम्बन्धी कुछ नहीं लिखा। हां, आगामी इतिहासकारों ने मालूम नहीं किस विवशता से यह प्रसंग बनाकर लिख दिया।

ज्ञानी ज्ञान सिंघ निहंग ने इस सम्बन्धी ख़ालसा

गुरमति प्रकाश में लिखा है:–

"सन् 1889 को श्री अकाल तख्त बुंगा और गुरु काशी दमदमा (साबो की तलवंडी) के पुजारियों ने मिल कर यह साखी (वार्ता) बनाई।"

कुइर सिंघ ने गुर बिलास, भाई मनी सिंघ से प्रसंग तथा साखियां (वात्ताएं) सुन कर लिखा। उस में भी इस का कोई उल्लेख नहीं। भला यह कैसे सम्भव है कि जिस भाई मनी सिंघ के बारे में कहा गया है कि उस ने सतिगुरु द्वारा उच्चारण की गई बीड़ लिखी, वह यह महत्वपूर्ण घटना न लिखवाते। एक बात और बाबा धीर मल्ल तो औरंगजेब द्वारा दिए गए कष्टों को सहन न करते हुए 1734 वि. में गढ़ रणथंबौर में गुरपुरी सिधार गए थे। ज्ञानी गरजा सिंघ ने गुरु की साखियां में लिखा है, "बाबा जी को दुष्टों ने बहुत कष्ट दिए। इसी गढ़ में साल सतारा सौ चउतीस मंगसर (माघ) सुदी दूज शुक्रवार के दिवस, इस फानी संसार से डेढ़ पहल दिवस चढ़े गुरपुरी सिधार गए।"

(सम्पादक प्यारा सिंघ पदम)

यह बीड़ उच्चारण करने की साखी श्रद्धावश, सहज स्वभाव सिक्खी के भले के लिए नहीं रची गई बल्कि अंग्रेज़ शासकों ने अपने वफादार सिक्खों को देहधारी गुरु से विमुख करने और 'ग्रंथ गुरु' का अनुयायी बनाने के लिये रची।

शमशेर सिंघ अशोक ने पंजाब की लहरों में भाई गुरमुख सिंघ के सिंघ सभा के नियम लिखे हैं:

1. श्री गुरू सिंघ सभा में कोई बात

सरकार से सम्बंधित नहीं की जायेगी।

2. ख़ैरखाही कौम, फरमा बरदारी सरकारी।

3. अंग्रेज़ी हुकूमत (शासन) से जुड़कर चलना आदि।

खालसा दीवान (सिंध सभा) लुधियाना ने अपने सहयोगियों को यह बात गांठ बांध लेने के लिये कही,

– सूर ससी वायू प्रिथवी
आप तेज लौ काइम।
ब्रिटिश राज का शाही झंडा
करे तरक्की दाइम।
– निमक हलाल नाथ का करीऐ,
मरन जीवन असिधुज पै धरीऐ।

(सिक्ख इतिहास ते कूके, लेखक अमर भारती)

1708 ई. में नांदेड़ में कुछ होने सम्बन्धी एक धारणा है कि दशम पातशाह, अपने तैयार किये गए अंगीठे में जा बैठे, अंगीठे को अग्नि दी गई, लपटे उठीं और दशमेश इस असार संसार से सदा के लिए अदृश्य (अलोप) हो गए।

श्री सतिगुरु गोबिंद सिंह जी ने 'गुरु ग्रंथ साहिब' को 1765 वि. (1708 ई.) को गद्दी दी और दोहरा उच्चारण किया:

आगिआ भई अकाल की
तबी चलाइओ पंथ।
सम सिखन को हुकम है
गुरू मानीओ ग्रंथ।

इस तथा अन्य दोहरों को आज कई गुरुद्वारों में अरदास के बाद भोले–भाले परन्तु अनजान सिक्खों द्वारा इसे गुरुबाणी समझ कर पढ़ा जाता है। किसी सिक्ख को यह नहीं बतलाया जाता कि यह भाई प्रहलाद सिंह के रहितनामे में अंकित है जो उस ने ख़ालसा पंथ की साजना से चार वर्ष पूर्व लिखा था। इस सम्बन्धी भाई कान्ह सिंह नाभा ने लिखा है, रहितनामे का आरंभ इस दोहे से होता है:

"अबचल नगर बैठे गुरु
मन महि कीआ बिचार।
बोलिआ पूरा सतिगुरु
मूरत स्री करतार।"

रहितनामा लिखने का वर्ष बताया है:

"संमत सत्रहि सै भए
बरख बवंजा निहार।
माघ वदी तिथि पंचमी
वीरवार सुभ वार।"

इस ने यह विचार नहीं किया कि सम्वत् 1752 में गुरु साहिब अबचल नगर नहीं पधारे थे और न ही उस समय ख़ालसे की रचना की थी। इसी रहितनामे के ये वाक्य है:

अकाल पुरख के हुकम
ते प्रगट चलायो पंथ।
सभ सिक्खन को हुकम है
गुरु मानिओ ग्रंथ।

गुरू खालसा मानीओ प्रगट

गुरु की देह..... (महान कोष पृष्ठ 796, संस्करण 1981)

इस अनुसार न ग्रंथ गुरु बनता है न ख़ालसा पंथ।

सतिगुरु जी के पास नांदेड़ में कोई श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ नहीं थी इस लिये गद्दी देने का प्रश्न ही नहीं उठता था। क्योंकि इस का निर्णय नौवें पातशाह को गद्दी देते समय ही हो गया था कि यदि ग्रंथ को गद्दी दी गई तो सभी लिख कर घर घर में ग्रंथ साहिब को रख लेंगे।

क्योंकि गद्दी श्री आदि ग्रंथ साहिब को दी नहीं गई थी इसी कारण शहीद सिक्ख मिशनरी कालेज के प्रिंसीपल गंगा सिंघ ने स. आसा सिंघ के प्रश्नः

दशमेश जी ने यदि कभी गुरूआई (गुरगद्दी) गुरु ग्रंथ साहिब को दी है तो कहां?

के उत्तर में स्पष्ट लिखाः

"दसम जी ने कभी गुरिआई
गुरु ग्रंथ साहिब को नहीं दी।"

(रसाला अंम्रित मार्च, 1936)

एक बात ओर यदि 1708 ई. में गुरूआई दी होती तब प्रत्येक हस्तलिखित बीड़ पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब लिखा जाता। कर्म सिंह पटवारी ने श्री दरबार साहिब अमृतसर के तोशेखाने में 1730 से 1881 तक के समय की दस हस्तलिखित बीड़ों के दर्शन किये हैं। वे गुर इतिहास जानकारी पुस्तक में लिखते हैं कि बीड़ों के सिरलेख (शीर्षक),

सूची पोथी का ततकरा (अनुक्रम) पोथी साहिब, सूची प्रती (प्रति), ग्रिंथ जी, ग्रंथ साहिब आदि लिखे हैं। भाई मनी सिंघ शहीद ने सिक्ख भगत माला में कहीं भी गुरु ग्रंथ साहिब नहीं लिखा बल्कि ग्रिंथ व ग्रंथ लिखा है। जैसे:

—ते गिरंथ जी विच्च सलोक है....

—कथा गिरंथ जी दी प्रीत करके सुणनी।

—ते गिरंथ दी बाणी पढ़े। (आदि)

मैकालिफ रचयिता 'सिक्ख धर्म (रिलीज़न)' भी केवल ग्रंथ साहिब लिखता है। भाई वीर सिंघ स्वयं भी मैकालिफ का संदर्भ देते हुए ग्रंथ साहिब लिखते हैं। कई स्थानों पर पवित्र पुस्तक पर ही नहीं, प्रैस द्वारा छपे ग्रंथों पर भी पहले आदि ग्रंथ साहिब जी लिखा जाता रहा है। क्योंकि सिक्खों में दो धर्म ग्रंथ स्वीकृत हैं, एक को आदि ग्रंथ तथा दूसरे को दसम ग्रंथ (दसवें पातशाह का) लिखा जाता है। इन दोनों का गुरुगद्दी से कोई सम्बन्ध नहीं। पंजाबी यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) की पुस्तक गुरु गोबिंद सिंह में डा. जे.एस. ग्रेवाल तथा डाक्टर एस.एस. बल ने लिखा है:

खालसा पंथ अथवा आदि ग्रंथ को गुरगद्दी सौंपना—यह सब महत्वपूर्ण और परस्पर सम्बन्धित बातें समकालीन गवाहियों में से कहीं भी नहीं मिलती।

ग्रंथ साहिब को भला 1708 में सतिगुरू जी गद्दी देते भी क्यों? जब कि वह स्वयं 1812 ई. तक पंच भैतिक शरीर में रहे। हां 1708 में उनहोंने नर—नाटक अवश्य किया, नीति वश।

जो पठान भाई– जमशेद खां और अताउला खां सतिगुरु जी पर घातक आक्रमण करने के लिए नादेड़ में मीठे बनकर रहते रहे, वे बहादुर शाह के भेजे हुए थे। उन में से जमशेद खां ने मौका (अवसर) देख कर, सतिगुरु जी को विराजमान समझ कर, कमर पर छुरे का प्रहार भी किया परन्तु वह सतिगुरु जी की तलवार से खत्म हो गया। दूसरा भागता हुआ सिक्खों ने मार दिया। बहादुर शाह ने शोक प्रकट करने के लिये 28 अक्तूबर 1708 को मातमी खिल्लअत जमशेद खां के पुत्र को भेजी। इस में लिखा है:

बजां कुशता बूद खिलअत मातमी
बि पिसर खान मज़कूर मुरमत शुद।

पठानों की नहीं, बादशाह की बदनियती के कारण सतिगुरु जी ने नादेड़ से छिप कर जाने का नाटक किया। सिक्ख इतिहासकार कवि सुक्खा सिंघ, भाई संतोख सिंघ, ज्ञानी ज्ञान सिंघ और महंत सुमेर सिंघ अपने ग्रंथों में एक ओर दमदमी बीड़ उच्चारण बारे, श्री आदि ग्रंथ साहिब को गुरूआई देने सम्बन्धी तथा 'आगिआ भई अकाल की' दोहरा के उच्चारण सम्बन्धी मौन हैं। दूसरी ओर लिखते हैं, आज्ञा अनुसार सिक्खों ने कनात के भीतर चिता बनाई। सतिगुरु जी ने आधी रात स्नान करके शस्त्र–वस्त्र सजाये, आप ने चिता से बाहर खड़े होने का आदेश दिया। अग्नि प्रकट की, लाटें (ज्वालाएं) निकली, सिक्ख विलाप करने लगे।

कवि सेनापति इस घटना का चरित्र लिखता है। वह

सतिगुरु जी का समकालीन ही नहीं, दरबारी कवि भी था। शमशेर सिंघ अशोक ने सेनापति की काव्य रचना 'स्री गुरु सोभा' सम्पादित की है। इस में नादेड़ नर नाटक सम्बन्धी लिखा है:

देखन कउ यो ही भई,
जानत सगल जहान।
किया चरित्र करतार को,
नहि कहि सकत बखान।

अगले दिन 8 अक्तूबर 1708 को, दिन निकलते ही सिक्खों को साधू मिले और उन्होंने बतलाया कि सतिगुरु जी उन्हें घोड़े पर सवार मिले थे। सिक्खों ने सतिगुरु जी को अग्नि भेंट हुआ समझ कर अंगीठे की पड़ताल की परन्तु उस में कोई अस्थि न मिली। उन्होंने अस्तबल में देखा, वहां कुमैत घोड़ा भी नहीं था।

साधुओं के मिलाप बारे में इतिहासकारों में अंतर है। परन्तु सिक्खों को यह ध्यान ही नहीं आया कि किसी के सन्मुख सतिगुरु जी ने शरीर को नहीं त्यागा। उन्होंने सतिगुरु जी की मृतक देह को चिता पर नहीं रखा और किसी ने अग्नि भेंट भी नहीं किया। फिर सतिगुरु जी ने आत्मघात तो नहीं करना थ न। उन्होंने तो नर नाटक किया था। हज़ूर साहिब में उसी दिन से सतिगुरु जी की प्रतीक्षा में घोड़े रखे जाते हैं। किसी अन्य सतिगुरु जी की प्रतीक्षा में घोड़े नहीं रखे जाते। कारण सिक्खों को विश्वास था कि दशम पातशाह ने पंच भौतिक शरीर नहीं त्यागा।

उस के पश्चात् सतिगुरु जी ने पूरे सितारे के किले में से घोड़ों की रकाबें पकड़ा कर बाला राओ और रुसतम राओ को निकाला जिस की समृति में मनमाड़ में गुरुद्वारा है। आप 47 वर्ष भादरे, 6 वर्ष जींद, 12 वर्ष पटियाले और 39 वर्ष नाभे रहे। आप बाबा अजापाल सिंघ के नाम से भ्रमण करते रहे और इच्छा अनुसार जंगों युद्धों में सहायता करते रहे।

भाई कान्ह सिंघ नाभा ने नाभे की झिड़ी में अंतिम वर्षों में बाबा अजापाल सिंघ की सेवा करते रहे, अपने परदादे बाबा सरूप सिंह के संदर्भ से लिखा है, "बाबा अजापाल सिंघ जी गुरु गोबिन्द सिंघ ही थे क्योंकि प्रत्यक्ष रूप में साहिब श्री कलगीधर जी हज़ूर साहिब में ज्योति ज्योति नहीं समाये। (मासिक पत्र फुलवाड़ी 1926)

बाबा अजापाल सिंघ सम्बन्धी, भाई कान्ह सिंघ के चाचा भाई बिशन सिंघ की लिखी हुई साखियां, भाई कान्ह सिंघ के पुत्र भगवंत सिंघ हरी जी से सतिगुरु प्रताप सिंघ जी ने 1940 में मंगवाई और 14 से 23 साखियां के ब्लाक बनवाये। वैसे भाई कान्ह सिंघ नाभा के महान् कोष में से, बाबा अजापाल सिंह और भादरे सम्बन्धी पढ़ते हुए सतिगुरु जी के बारे में जानकारी स्पष्ट हो जाती है।

सूझवान और श्रद्धावान सिक्खों को कोई भ्रम नहीं रह गया था कि गुरू गोबिन्द सिंघ ही बाबा अजापाल सिंघ के नाम के अधीन सिक्खों को दर्शन देते रहे थे।

आप ने इच्छानुसार काया पलटने से पूर्व गुरगद्दी की

अमानत (धरोहर) हरो नदी के तट पर तपस्या कर रहे, सतिगुरु बालक सिंघ को सौंपी। आप ने वचन किया कि मेरा ही अवतार गुरु राम सिंघ होगा, यह गद्दी उसे देना उसी की अमानत है। ज्ञानी ज्ञान सिंघ लिखते हैं:

बालक ब्रिगेस तै विसेस उपदेस नाम,
यदी नर नारी लै अपारी भव तै तरे।
और इलहाम करतार कई बार दयो,
नाम दै उधार करि जीवन का तूं खरे।
ऐसे गुर दसम दरस दै जो कहयो तांहि,
मेरो अवतार'अंस राम सिंघ ह्वै भरे।
यांहि हेत तांहि, नांहि और कांहि मांहि,
निज शकति रखाई, गुरु वाक दिढ थे धरे।

सतिगुरु बालक सिंघ को गद्दी दे कर, दसवें पातशाह ने श्री आदि ग्रंथ साहिब में वर्णित गुरु अथवा सतिगुरु की महानता का ही पक्ष उजागर किया था।

गुरवाणी में अंकित हैं:

– **सतिपुरखु जिनि जानिआ**
सतिगुरु तिस का नाउ। (सुखमनी)
– **गुर रसना अंम्रितु बोलदी**
हरिनाम सुहावी। (महला 5)
– **हरि जुगह जुगो जुग**
जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी।
(महला 5)

और पीढ़ी मनुष्यों की ही चलती है।

गुरु, शास्त्रों के अनुसार अज्ञानता के अन्धकार को दूर करता है, वह तत्वज्ञान देता है। वह धर्म उपदेष्टा (उपदेशक) और धर्माचार्य होता है।

– **गुर दाता समरथ समाइ।** (महला 5)

चौथे पातशाह मलार राग के एक शब्द मे सतिगुरु को हरि का नाम दृढ़ करने वाला लिखते हैं। सिक्ख को निर्जीव की पूजा करने से वर्जित करते हैं। वे सतिगुरु को वस्त्र तथा भोजन आदि भेंट करने की शिक्षा देते हैं। आप जी की वाणी में लिखा है:

भरमि भूले अगिआनी अंधुले
भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै।।
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि
सभ बिरथी घाल गवावै।।
ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ
हरि हरि कथा सुणावै।।
तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर
बहु बिधि सति करि मुखि संचहु
तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै।।
सतिगुर देउ परतखि हरि मूरति
जो अंम्रित बचन सुणावै।। (मलार महला 4)

निस्संदेह ऐसा सतिगुरु देहधारी ही हो सकता है। इसीलिए लिखा है:

हरि नामु दीआ गुर परउपकारी
धनु धंनु गुरु का पिता माता। (महला 3)

दसवें पातशाह ने पिता–माता वाले सतिगुरु वालक सिंघ को गुरगद्दी दी। उसी गुरगद्दी को 1841 ई. में सतिगुरु राम सिंघ जी ने सुशोभित किया। उस समय तक सिक्खी में गिरावट आ चुकी थी, उस में कितनी गिरावट आ गई थी? ज्ञानी ज्ञान सिंघ के शब्दों में:

औरैं रीत औरैं मीत औरै परतीत प्रीति
खान, पहिरान ग्यान मान औरे जन कै।
डारे दसतारे साफ़े माए है संमारे अच्छै,
कच्छै तज गए धोती सुथू संग तन कै।
धारे है गरारे तंबे तहिमत अधिक लंबे
जिन देख मिसी गऊ कंबै तुरक गन कै।
सिखी दशमेश की सु की अपर देस दी
असिखी मरी पेशगी छिनार बन ठन कै।

दुखी होकर ज्ञानी जी यह भी लिखते हैं:

हाए वे कसाई रहे सिक्खी गऊ घाए हैं।

सिक्ख बुरी तरह पतित हो चुके थे। वे नशा करने वाले और विषयी हो चुके थे। धर्म कर्म त्याग चुके थे। उन में से सतिगुरु राम सिंघ जी को केवल ढाई सच्चे शुद्ध रूप में सिक्ख मिले।

बाबा जमीअत सिंघ गिल्ल आधे सिक्ख थे और बाबा जमीअत सिंघ (कान्हा काछा) तथा स. लहिणा सिंघ (घरजाख) पूर्ण।

तेगें मार कर, प्राणों को निछावर कर के सिक्खों ने राज्य प्राप्त किया था। वे भी महाराजा रणजीत सिंघ के

पश्चात् मिट्टी में मिलने लगा। उस राज्य में गऊ हत्या नहीं थी, वैसे मृत्यु दण्ड दिया जाता था। प्रजा सुखी थी परन्तु वह राज्य परस्पर लड़ाई के कारण विनाश के अन्धकूप में डूब गया, हालात ऐसे हो गये:

पिछों इक सरकार दे खेड चली,
पई नित हुंदी मारो मार मीआं।
सिंघां मार सरदारां दा नास कीता,
सभो कतल होए वारो वार मीआं।
सिर फ़ौज दे रिहा न कोई कुंडा,
होए शुतर जिउं बाझ मुहार मीआं।
शाह मुहंमदा फिरन सरदार लुकदे,
भूतमंडली होई तिआर मीआं।

इस भूत मंडली ने जब 23 नवंबर 1845 को फ़रंगी के साथ एलाने जंग किया तब सतिगुरु जी ने सिक्ख सरदारों की बदनियती देख कर युद्ध जीतने के लिए अरदास नहीं की। बंदूक दरिया में फैंक कर, बल्कि नौकरी छोड़ कर आप श्री भैणी साहिब लौट आए। आप ने अपने हाथों से परिश्रम किया, अकाल बुंगे बैठकर तप किया, देश की दुर्दशा के कारणों सम्बन्धी चिंतन किया, सुप्त स्वाभिमान को जगाने के लिए देश भक्ति और प्रभु-भक्ति के शस्त्र संभाले, नाम बाणी का प्रचार प्रसार किया। इस सम्बन्धी भाई कान्ह सिंघ लिखते हैं:

विसय अगनि कर
तपत रिदे जिन नामाम्रित दे ठारे।

गुरमत दे अनुरागी कीते
पामर पापी भारे।
भंग शराब अफीम छुड़ा के
नशा प्रेम दा दिता।
भंग खाण नूं खंडन कीता
दस धरम दा कित्ता।
फुट ईरखा वैर भाव
अर नफ़रत मनो हटाई।
मुदिता मैत्री करुणा
द्रिढ़ कर सिखां चित्त वसाई।

....

....

बाल अवसथा विच व्रिजेश ने
अदभुति मूरति चीनी।
सिर ते खंडा हथ्थ सिमरनी
चढ़िआ बांकी चीनी।
जिस दी मिठी वाणी
अगे फिकी लगे चीनी।
दरशन करके नेत्र विगसदे
जिउ रवि पिख गुलचीनी।

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी लिखते हैं कि सतिगुरु जी के संत ख़ालसे-नामधारी सिक्खों की मर्यादा सिक्खी की मर्यादा तथा आवश्यकता अनुसार थी। सतिगुरु जी गुर-मंत्र देते थे, कलाम नहीं:

कोऊ जो कहित ये
कलाम दीनी सय्यदानी
सोऊ सभि कूर हम पेखयो अजमाइ कै।

सतिगुरु जी द्वारा दिए कान में गुर–मंत्र को जपने और उपदेश मानने से सिक्खी का कैसे कायाकल्प हो गया:

पाइ एह हुकम प्रमेस का बिसेस फिर,
राम मिरगेस उपदेस दैन लागिओ।
हुक्के छडवाए रखवाए केस मोनियों के
सुदा छकि थाए सिक्ख भाग
जिनै जागिओ।
फैलयो जस भारी सिक्ख थीए
तांहि के अपारी,
सिंघ पंथ बिरधाइओ
नाम रस पागिओ।
फीम भंग पोसत
शराब मास चोरी जारी,
ठग्गी तजि थीए संत सतिजुग आगिओ।

(पंथ प्रकाश–ज्ञानी ज्ञान सिंघ)

सतिगुरु जी ने अध्यात्मिक, सदाचारक, राजनैतिक आदि प्रत्येक पक्ष में क्रान्ति ला दी। अन्य विशेष व्यक्तियों ने तो आप की शोभा की ही। अंग्रेज़ शासक जो आप के हाथों से राज्य–भार छिने जाने का भय अनुभव करते थे, ने भी लिखा कि आप अंग्रेजी शासन के वफादार नहीं थे, आप का लोगों में आदर (सम्मान) गुरु, सतिगुरु और

सतिगुरु सच्चे पातशाह के रूप में था। आप को सिक्ख गुरु नानक और गुरु गोबिंद सिंह का अवतार मानते हैं।

इन्साईकलोपीडिया ब्रिटेनिका में श्री सतिगुरु राम सिंघ के सिंघों (नामधारी सिक्खों) सम्बन्धी लिखा है:

अकाली अपना प्रभाव गंवा बैठे थे। कूकों (नामधारी सिक्खों) की संख्या यद्यपि कम थी (सतिगुरु जी के प्रदेश गमन के पश्चात्) पर वे अपने दृढ़ निश्चय के प्रति निष्ठावान रहे।

लेटी–जिज्ञासू शीर्षक अधीन लिखा है, "सिक्खी जब पुनः पलरने लगी तब इस के सभी वर्ग समानरूप से पुनः सजीव हुए। इस का श्रेष्ठ उदाहरण कूकों ने पेश किया। वे (गुरु) गोबिन्द सिंघ के नैतिक मूल्यों के दृढ़ अनुयायी है। कूके की निशानी सीधी दस्तार, मनकों वाला हार अथवा ऊन की माला है, जो आरम्भिक रूप में तपस्या के अनुशासन की सूचक है। (पृष्ठ 248 जिल्द 20 संस्करण 1965)

सतिगुरु राम सिंघ और नामधारी सिक्खों सम्बन्धी सय्यद मोहम्मद लतीफ ने लिखा:

(गुरु) राम सिंघ और उस के श्रद्धालुओं के मुद्दे केवल धार्मिक नहीं थे बल्कि एक धार्मिक, सुधारक एवं नैतिक शिक्षाओं के रूप में उन्होंने गहरे राजनैतिक मनसूबे बनाये।

इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में लिखा है:

(गुरु) राम सिंह सिक्ख दार्शनिक एवं सुधारक और अंग्रेज़ व्यापारियों के साथ तथा नौकरियों के प्रति असहयोग तथा बहिष्कार को राजनैतिक हथियार बना कर उपयोग करने वाला पहला भारतीय है।

(Guru) Ram Singh sikh philosopher and reformer and the first Indian to use non-cooperation and boycott of British merchandise and service as a weapon of political power.

(Vol-8, page 142)

बहिष्कार एवं स्वदेशी के साथ सतिगुरु जी ने निजी डाक–प्रबन्ध भी चलाया जिस ने अंग्रेज़ सरकार को नामधारियों की गुप्त गतिविधियों को समझने का अवसर शीघ्र नहीं दिया।

सतिगुरु जी ने स्त्रियों को मारना, बेचना, बाल–विवाह, वट्टा करना (बहनोई की बहन से अपनी शादी) तथा सती प्रथा बंद करवाई और विधवा विवाह आरम्भ किये।

गुलाम भीख जलंधरी ने आप के प्रभाव के सम्बन्ध में लिखा है:

"गांव के गांव और मौज़े के मौज़े कूके हो गये। जिस वक्त गुरु नानक देव जी मौजूद थे, ने सिलसिला अरशाद शुरू किया उन्हीं को नसीब न हुआ कि दस वर्ष में भी एक हज़ार आदमी उन के चेलों में होता। उन के मजहब का अरूज पिछले मनसद नशीनों के वक्त में हुआ। इस मूजिद की ज़िंदगी में लाखों कूका (सिक्ख) हो गये।"

अजिते रंधावे की साखी, सौ साखी, गुरिंड नामा, सूरज प्रकाश आदि रचनाओं में आप के बारे में भविष्य वाक्य लिखे हुए थे कि आप अनंत शक्ति वाले, सभी के सिरमौर

(सिरताज), बारहवें सतिगुरु हैं। आप के समकालीन सिक्खों ने इसी रूप में आप के प्रति श्रद्धा रखी।

बाबा निहाल सिंघ कलसीआ ने उर्दू पुस्तक खुरशीद ख़ालसा में आप को सिक्ख परम्परा का बारहवां गुरु माना है। सिंघ सभा ने इस का विरोध किया और लाहौर दीवान में बहिष्कार (बाईकाट) का प्रस्ताव रखा, तब बाबा खेम सिंघ बेदी ने इस पुस्तक का समर्थन किया।

सतिगुरु जी ने पंजाब में से लगभग लुप्त हो चुकी सिक्खी की मर्यादा के साथ पुनः स्थाप्ति करने के लिये श्री हज़ूर साहिब जहां अभी पुरातन लंगर की मर्यादा प्रचलित थी, से भाई राए सिंघ द्वारा मर्यादा मंगवाकर सिक्खी में वही लंगर की मर्यादा प्रचलित की।

अनपढ़ता और नासमझी के कारण श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ों का अनादर होता था। गुरुबाणी का पाठ नहीं होता था, उन पर धूल जम चुकी थी। आप ने झाड़–पोंछकर साफ करके पवित्रता से धर्मशालाओं में बीड़ों का प्रकाश करवया। आप ने श्री भैणी साहिब में 25 दरबार साहिब प्रकाश करे, स्वयं बैठकर पाठियों के पाठ शुद्ध किये। पाठों की शुद्धि के लिए संथा देने का क्रम आज भी जारी है। श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी श्री आदि ग्रंथ साहिब, श्री दशम ग्रंथ साहिब के प्रामाणिक एवं शुद्ध पाठी तैयार करने के लिये संथा देते, दिलवाते रहे हैं, पाठ प्रतियोगिताएं करवाते रहे हैं और शुद्ध पाठ करने वालों को मान देते रहे हैं।

आप जी शुद्ध पाठ ही नहीं, गुरुवाणी का संबंधित

रागों के अनुसार शुद्ध गायन करने की शिक्षा स्वयं देते और उस्तादों से दिलवाते रहे हैं। श्री भैणी साहिब के संगीत विद्यालय में शास्त्रीय संगीत और गुरमत संगीत का संगम हुआ है। श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी ने प्राचीन रीतियों को प्रचलित किया और नई रीतियों का शिक्षण दिया है।

आम तौर पर पाठी, गुरबाणी में प्रयुक्त मात्राओं का वैयाकरणिक दृष्टि से प्रयोग करने में अनभिज्ञ होते हैं। इस लिए वे मनु, मन, मनि, नेह, नेहु, पावह, पावहि, गावै गावहि, गावीऐ, हुकम, हुकमु, हुकमि, हुकमी, गुरू, गुर, गुरु, के, कै आदि में प्रयुक्त मात्राओं का शुद्ध उच्चरण नहीं करते जिससे कई बार अर्थ बदल जाता है। गलत उच्चारण प्रायः 'औंकड़' (ु), 'सिहारी' (ि), 'लां' (े), 'दुलां' (ै) का होता है।

सतिगुरू गोबिंद सिंघ जी से सम्बन्धित साखी है कि आप ने, 'करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सुरा।" में 'कै' को 'के' पढ़ने वाले को सज़ा दी। आप ने सिक्खों को समझाया कि 'के जाणै' का अर्थ क्या जानता है और 'कै जाणै' का अर्थ या जानता है, बनता है। भाव कर्त्ता की मित या वह आप जानता है अथवा सतिगुरु।

सतिगुरु जी गुरबाणी का पाठ करने वाले को प्रत्येक लग-मात्रा का शुद्ध उच्चारण करने का आदेश करते हैं।

नामधारी सिक्ख, गुरबाणी का आदर करने के लिये यदि जंगल-पानी शौच आदि जा कर ओएं हों तब केशी स्नान करके पाठ करते हैं, नहीं तो जोड़े (जूते) उतार कर

पांच स्नाना करके (दो हाथ, दो पैर तथा मूँह धोकर) पाठ करने के लिये बैठते हैं, वे अरदास करते हैं, "हे महाराज जो तैं गुरु रूप धार के हुकम दित्ता है ग्रंथ साहिब में सो आपणा हुकम सदा ई मनाई।"

नामधारी सिक्खों का केशों सहित स्नान, कान में गुरमंत्र, सुच सोध रखणा, भजन बंदगी करना, देहधारी गुरु की आज्ञा में रहना सब गुरुबाणी के अनुसार है।

सीधी दस्तार सहित गुरमुख जैसा पहरावा पहनना, पांच ककारों को धारण करना, सुच सोध रखना, ऊन की माला पहनना, नशों से मुक्त पूर्ण शाकाहारी होना, जीव के कल्याणार्थ यत्नशील रहना, नीले काले वस्त्र न पहनना, इधर–उधर से खाना खाने से संकोच करना, नामधारी सिक्खों की पहचान है।

उन्हीं के नितनेम में श्री आदि ग्रंथ साहिब तथा श्री दसम ग्रंथ की वाणियां शामिल हैं। ये वाणियां पढ़ने की आवश्यक्ता अमृत तैयार करने, हवन करने, वरनी करने के समय भी होती हैं। नित्य उपयोग में आने वाली वाणियों का नित्य अभ्यास करने के लिये, नितनेम करने के लिये, जिन वाणियों की आवश्यकता रहती है उन्हीं का 'नामधारी नितनेम' नाम से गुटका श्री सतिगुरु जी की आज्ञा अनुसार तैयार किया जाता रहा है। 'नामधारी नितनेम' का वर्तमान संस्करण भी सतिगुरु सच्चे पातशाह जी की आज्ञा अनुसार तैयार किया गया है इस गुटके के हिन्दी में लिप्यंतरण करने का कार्य सतिगुरु सच्चे पातशाह जी की आज्ञा से

डा. देवेन्द्र सिंह उसाहन ने बहुत परिश्रम एवं श्रद्धा से किया है।

गुरु की कृपा से अकाल पुरख की समझ आती है। उसी की कृपा से गुरबाणी के अर्थ समझ आते हैं।

यह आशा की जाती है कि भारतीय अध्यात्मिक परम्परा सम्बन्धी, सिक्ख पृष्ठभूमि और गुरबाणी के शुद्ध पाठ तथा अर्थ बोध सम्बन्धी लिखी यह जानकारी गुरुबाणी का पाठ करने वालों को सही दिशा देगी।

बसंत पंचमी 2057 वि. **—तारा सिंह अनजान**